सुनो रे सुनो रे सुनो
सुनो रे सुनो रे सुनो
सुनो रे सुनो रे सुनो भैया
सुनो रे सुनो रे सुनो
सुनो रे सुनो रे सुनो
सुनो रे सुनो रे सुनो बहिना

आंकड़ों का जाल फैलाया जनता छटपटाए
ग़रीब में न गिनती उसकी जो दिन में तीस कमाए
अन्न भरे भंडार हैं चूहे मौज़ उड़ाए
घास खाकर जीने वाला भूखा ना कहलाए
भुखमरी से मरने वाला अपच के खाते जाए
दाल–रोटी हो गई मँहगी, मँहगाई घटती जाए
(ये क्या बात हुई भैया)
खेल अनौखा आंकड़ों का इससे कौन बचाए
बहुत हुआ अब ये सिलसिला
नारों की गूंज से आसमां हिला
हालात बदलने को कारवां चला
मज़दूर किसान का जत्था चला
झंडा चला लाल झंडा चला

शिक्षा चौपट, रोज़ी छिन गई ख़ूब बढ़ी मँहगाई
भ्रष्टाचार की धूम मचाके भुखमरी फैलाई
अमरीका के पिट्ठू बनके लाने चले एफ़.डी.आई.
किसानों की हालत पतली मज़दूरों की शामत आई
तिकड़म से कुर्सी बचाई रिश्वत खुली खाई
बहुत हुआ अब ये सिलसिला
नारों की गूंज से आसमां हिला
हालात बदलने को कारवां चला
मज़दूर किसान का जत्था चला
झंडा चला लाल झंडा चला

औरत को क़ानून में यूं तो पूरे हैं अधिकार
मां–बेटी पर होता हमला लेकिन सरेबाज़ार
आंखें मूंदे पुलिस है सोती बहरी है सरकार
दकियानूसी सोच परोसें धर्म के ठेकेदार

घड़ियाली आंसू बहाते शासन के सरदार
जनता पर डंडे बरसाती गुंडों की ये यार

बहुत हुआ अब ये सिलसिला
नारों की गूंज से आसमां हिला
हालात बदलने को कारवां चला
मज़दूर किसान का जत्था चला
झंडा चला लाल झंडा चला